ISSN: 2278 – 2168

Milestone Education Review

(The Journal of Ideas on Educational & Social Transformation)

Year 11, No. 01 & 02 (October, 2020)

Milestone Education Society

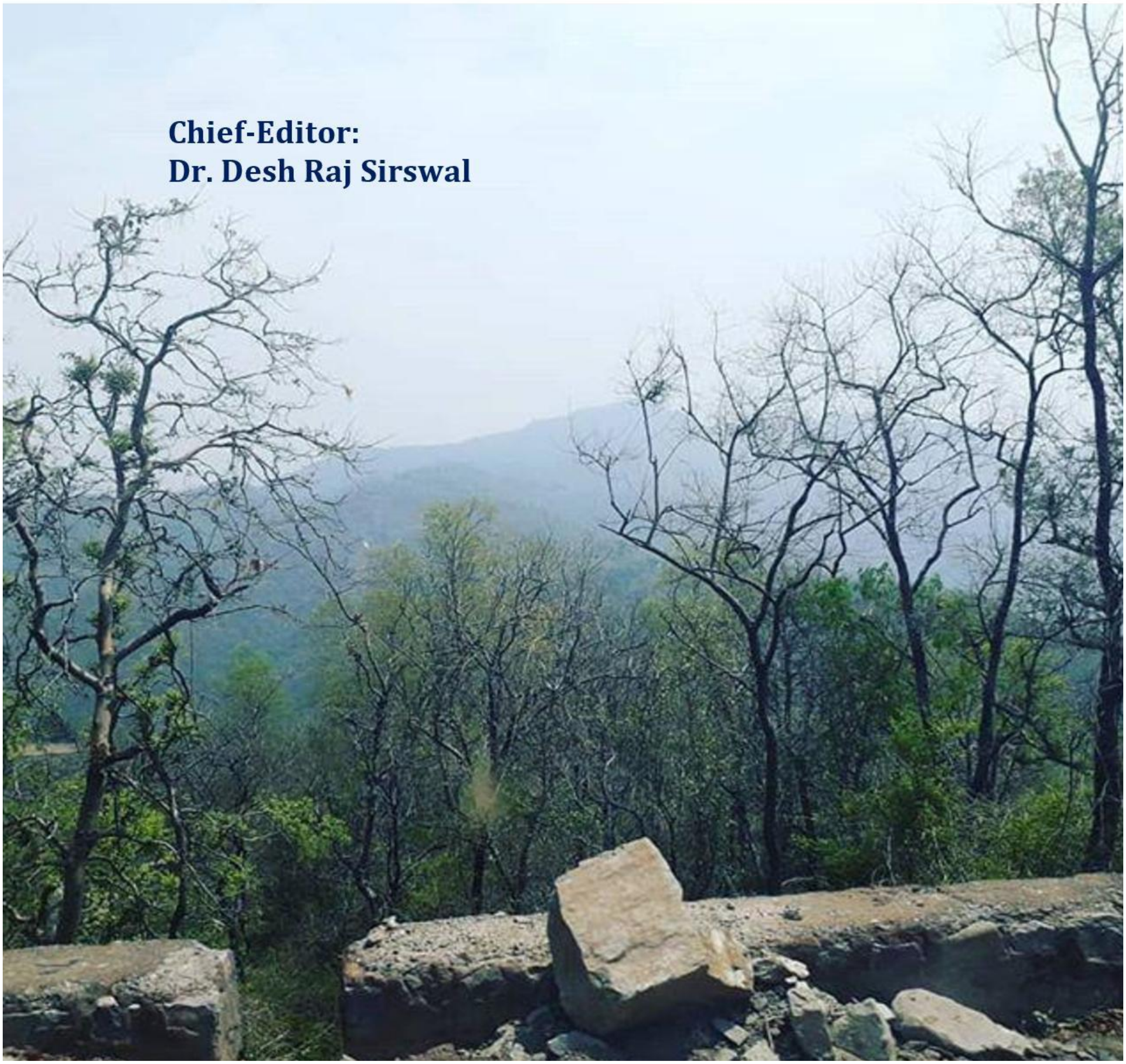

Chief-Editor:
Dr. Desh Raj Sirswal

Milestone Education Review (2278-2168)

Milestone Education Review (The Journal of Ideas on Educational & Social Transformation) is an online peer-reviewed bi-annual journal of Milestone Education Society (Regd.) Pehowa (Kurukshetra). For us education refers to any act or experience that has a formative effect on the mind, character, or physical ability of an individual. The role of education must be as an instrument of social change and social transformation. Social transformation refers to large scale of social change as in cultural reforms and transformations. The first occurs with the individual, the second with the social system. This journal offers an opportunity to all academicians including educationist, social-scientists, philosophers and social activities to share their views. Each issue contains about 100 pages.

© Milestone Education Society (Regd.), Pehowa (Kurukshetra)

Chief-Editor:

Dr. Desh Raj Sirswal, Assistant Professor (Philosophy), Post Graduate Govt. College, Sector-46, Chandigarh.

Editorial Advisory Board:

Dr. Ranjan Kumar Behera (St. Joseph University, Virgin Town, Ikishe Model Village, Dimapur, Nagaland).

Dr. Merina Islam (Department of Philosophy, Cachar College, Silchar, Assam).

Dr. Dinesh Chahal (Department of Education, Central University of Haryana, Mahendergarh).

Dr. Manoj Kumar, (P.G. Department of Sociology, P.G.Govt. College for Girls, Sector-11, Chandigarh).

Dr. Sudhir Baweja (University School of Open Learning,, Panjab University, Chandigarh).

Dr. K. Victor Babu (Institute of Education, Mettu University, Metu, Ethiopia).

Dr. Jayadev Sahoo (Jr. Lecturer in Logic & Philosophy, GM Jr. College, Sambalpur, Odisha).

Dr. Rasmita Satapathy (Department of Philosophy, Ramnagar College, West Bengal.)

Dr.Pankoj Kanti Sarkar (Department of Philosophy, Debra Thana Sahid Kshudiram Smriti Mahavidyalaya, Paschim Medinipur, West Bengal).

Mrs. Chetna Gupta (Department of Philosophy, SPM College, University of Delhi).

Dr. Kamal Krishan (Department of Hindi, P.G.Govt. College for Girls, Sector-11, Chandigarh).

Declaration: The opinions expressed in the articles of this journal are those of the individual authors, and not necessary of those of the Society or the Editor.

In this issue………..

Sr. No.	Title and Author	Page No.
1.	Conflict betweenTradition and Modernity-An Anlytical study :Dr.Sandesh Tyagi	4
2.	Soren Kierkegaard : Three Stages of Life : Albert Amalraj M	10
3.	The Significance, Purpose and Limit of Human Enhancement: M. Arockia Charles	15
4.	Does the Present Time need Feminism? An Exploration : Sananda Sen	19
5.	What can be shown, can not be said: Wittgenstein’s thoughts special reference to Tractatus Logico Philosophicas: Lipika Das	27
6.	Mill's Theory of Reference: Soumen Roy	34
7.	भारत में नैतिक नेतृत्व: वर्तमान परिदृश्य एवं भविष्य डॉ देशराज सिरसवाल	42
8.	CONTRIBUTORS OF THE ISSUE	53

भारत में नैतिक नेतृत्व: वर्तमान परिदृश्य एवं भविष्य

(Ethical Leadership in India: Present Scenario and Future)

डॉ देशराज सिरसवाल

शोध-पत्र सार

"नेतृत्व" एक विस्तृत प्रत्यय है जो कई सदियों से समाजशास्त्र, मनोविज्ञान, राजनीति शास्त्र, लोकप्रशासन के अध्ययन का विषय रहा है. यह एक ऐसा शब्द है जो जेहन में आते ही राजनीतिज्ञ अथवा राजनीति का बोध कराता है परन्तु वास्तव में ऐसा नहीं है | इसका दायरा असीमित है | समाज को को दिशा देना, भावी पीढ़ी का मार्गदर्शन करना, समानता की भावना पैदा करना, समाज के प्रति उतरदायी बनाना इत्यादि भी नेतृत्व करने वालों का ही कार्य है. "नैतिक नेतृत्व" से अभिप्राय उस नेतृत्व से है जो नैतिक मूल्यों पर आधारित हो और दूसरों को गरिमापूर्ण जीवन और अधिकारों के प्रति संघर्ष के लिए वचनबद्ध हो. जब हम "नैतिक नेतृत्व" की बात करते हैं तो हमारे सामने ऐसे नेता की छवि उत्पन्न होती हैं जो अपने चरित्र से, अपने कर्म से, अपने निर्णयों से और अपनी विस्तृत समझ से लोहा मनवा चुका होता है. भारत जैसे लोकतान्त्रिक देश में आज "नैतिक नेतृत्व" की ज्यादा आवश्यकता है क्योंकि हम किसी भी क्षेत्र में देख लें तो जो लोग समाज और देश का नेतृत्व की बात करते हैं उनके प्राय लोकतान्त्रिक मूल्यों का अभाव, धन लोलुपता, कर्महीनता और आदर्श जीवन के प्रति नकारात्मक भाव इत्यादि दुर्गुण देखने को मिलते हैं. भारत में जब भी हम नैतिक नेतृत्व की बात करते हैं तो हमारा अभिप्राय उस "आदर्श नेतृत्व" से है जो समाज के हर क्षेत्र में न्याय, समानता और भ्रातृत्व के गुणों से युक्त हो और उस सभ्यता/ शिष्टाचार के जीवन में प्रयोग से है जोकि लोकतान्त्रिक देश में न्याय, समानता की स्थापना में सहयोग दे सके. प्रस्तुत शोध पत्र में हमारा मुख्य उद्देश्य भारत की वर्तमान सामाजिक-धार्मिक- राजनैतिक परिस्थितियों के सन्दर्भ में "नैतिक नेतृत्व" के विभिन्न पक्षों का अध्ययन करना है.

परिचय:

एक न्यायप्रिय और सहानुभूतिपूर्ण सामाजिक स्थिति किसी भी लोकतान्त्रिक देश की पहचान होती हैं जहाँ पर किसी भी दोषपूर्ण मतभेदों के बिना, किसी दुःखदायी इतिहास को छेड़े बिना एक सकारात्मक

भविष्य के निर्माण का सपना हर नागरिक के दिल में होता है. यह तभी सम्भव है जब जीवन के हर क्षेत्र में काम करने वाले नेता उन सार्वभौम आदर्शों और गुणों को बिना किसी देश, धर्म, धन और जाति की परिधि के आत्मसात करके चले जिससे समाज और देश दोनों का सकारात्मक विकास हो. देश का हर नागरिक समान स्वतन्त्रता, समान नागरिकता के उतराधिकार का प्रयोग कर पाए साथ ही हर नागरिक में कर्तव्यबोध भी उत्पन्न हो. लेकिन हम देखते हैं की विश्वस्तर पर भाषा, धर्म, जाति, लिंग को आधार बनाकर मनुष्य ही मनुष्य को खत्म कर रहा है और मानव सभ्यता पर अपने यह चिन्ह छोड़ उसे कलंकित कर रहा है. ऐसे में हमें ऐसे नेताओं की जरूरत है जो हमें धर्म, जाति, लिंग, वर्ग आदि की सीमाएं तोड़ मानव बनने के लिए प्रेरित करें और देश-समाज विकास में हर नागरिक का योगदान निश्चित करें. "नैतिक नेतृत्व" की अवधारणा ऐसे ही नेतृत्व का अध्ययन करने का एक प्रयास है जो की विश्वस्तर पर "प्रायोगिक नीतिशास्त्र" का अंग बन चुका है.

नैतिक मूल्य और उनका अर्जन:

मूल्य जन्मजात नहीं होते हैं. इनका विकास सामाजिकरण की प्रकिया के साथ साथ होता है. मूल्यों का अर्जन समाज में ही होता है, इस कारण से समाज और संस्कृति दोनों ही का योगदान मूल्यों के क्षेत्र में होता है और वही मूल्यों के निर्धारक भी है. सामाजिक मूल्य वे सामाजिक मानक , लक्ष्य या आदर्श है जिनके आधार पर विभिन्न सामाजिक परिस्थितियों तथा विषयों का मुल्यांकन होता है. ये मूल्य सामाजिक जीवन में बहुत महत्वपूर्ण समझे जाते हैं. सामाजिक मूल्य समाज व्यवस्था की देन होते हैं और यह व्यस्था तथ्यात्मक (वास्तविकता पर आधारित) और आदर्शात्मक होती है. इन्हीं के आधार पर मूल्यों के सामाजिक प्रतिमान बनते हैं. समाज किसी भी व्यक्ति के लिए संस्कृति की पाठशाला के तौर पर कार्य करता है इसी दौरान व्यक्ति के जीवन के प्रत्येक पहलु का समाजीकरण होता है और व्यक्ति विविध सांस्कृतिक मूल्यों एवम नीतिशास्त्र के विभिन्न पहलुओं से परिचित होता है जैसे बडो का सम्मान करना, बड़ों की आज्ञापालन, रिश्तों का सम्मान इत्यादि. यह सब व्यक्ति में व्यक्तिगत और सामाजिक नैतिकता निर्माण में मदद करते हैं. लेकिन इस तरह की नैतिकता ज्यादातर प्रथागत नैतिकता होती है जोकी सिर्फ अपने परिवार, अपने जाति, अपने धर्म तक ही सिमित रह जाति है. इसलिए हमें ऐसे सामाजिक प्रतिमानों को नया स्वरूप देते हुए, सांस्कृतिक पृष्ठभूमि के अलावा वर्तमान समय में उपयोगी मूल्यों की आवश्कता महसूस होती है.

सभ्यता और संस्कृति :

अगर हम सभ्यता और संस्कृति के अंतर की बात करें तो संस्कृति का सम्बन्ध शिष्टाचार और मस्तिष्क के प्रशिक्षण से है जबकि सभ्यता का अर्थ कला और विज्ञानं की अवस्था से है . संस्कृति सामाजिक जीवन के के विचारात्मक पक्ष को दर्शाती है जबकि सभ्यता विशेष रूप से भौतिक पक्ष से सम्बन्धित है.[1] मैकाइवर और पेज के अनुसार, सभ्यता से हमरा अर्थ अपने जीवन की दशाओं को नियंत्रित करने के लिए मानव द्वारा नियोजित सम्पूर्ण संगठन और यांत्रिकता से है"[2] सभ्यता को विभिन्न बिन्दुओं द्वारा अच्छे ढंग से समझा जा सकता है :

1. सभ्यता प्रमुख रूप से संस्कृति का भौतिक पक्ष है .
2. सभ्यता के अंतर्गत आने वाली भौतिक वस्तुएं हमारी आवश्यकताओं की पूर्ति एक साधन के रूप में करती है .
3. भौतिक पदार्थों के अतिरिक्त , इन पदार्थों के निर्माण करने वाला ज्ञान अर्थात टेक्नोलॉजी भी सभ्यता के ही अंतर्गत आती है.
4. सभ्यता के अनुपयोगी अंग को व्यक्ति त्याग देता है .
5. सभ्यता एक परिवर्तनशील धारणा है.

सभ्यता का सम्बन्ध उपयोगिता से है जबकि संस्कृति आस्था या विश्वास पर आधारित है. हम सभी अपनी अपनी संस्कृतियों को श्रेष्ट समझते हैं इसलिए किसी दूसरी संस्कृति को अपनाने में हमें आसानी नहीं होती जबकि की सभ्यता बिना प्रयास के आगे बदती रहती है जबकि संस्कृति नहीं. क्योंकि संस्कृति को अपनाने के लिए हमे अपनी मनोवृति को बदलना पड़ता है. अतः हम कह सकते हैं की जब समाज के पास संस्कृति को प्राप्त करने के जितने उन्नत साधन होंगे सभ्यता उतनी ही प्रगतिशील होती है.[3] नैतिक नेतृत्व के लिए सबसे पहले हमें संस्कृति के संवाहकों का सही विश्लेष्ण करना होगा जिससे हम आज के अनुसार सही शिष्टाचार के मापदंड बना सके जिसमें अपनी संस्कृति के मूल्यों का भी संवहन कर सकें.

मूल्यों का वर्गीकरण:

व्यक्ति केजीवन के उद्देश्यों और लक्ष्यों की प्राप्ति में हो आदर्श रूप में सहायक होते हैं, वही मूल्य होते है. मूल्य जीवन को शुभ और गरिमापूर्ण बनाते हैं तथा व्यक्तिगत और चारित्रिक उत्थान में सहायक होते हैं. मूल्यों की प्रकृति और आवश्यकता के अनुसार हम इनका निम्नलिखित वर्गीकरण कर सकते है:

- सामाजिक मूल्य: अधिकार, कर्तव्य, न्याय, स्वत्तंत्रता, समानता , बंधुत्व , उतरदायित्व इत्यादि.
- मानव मूल्य: नैतिक मूल्य, आध्यात्मिक मूल्य, भौतिक मूल्य, सौन्दर्यात्मक मूल्य, मनोवैज्ञानिक मूल्य
- कार्यक्षेत्र सम्बन्धी मूल्य: राजनैतिक मूल्य, न्यायिक मूल्य, सिविल सेवा मूल्य, व्यावसायिक मूल्य इत्यादि.[4]

कई बार हम देखते हैं की मानव -मूल्य नकारात्मक पक्ष भी रखते हैं जैसे वर्तमान समय में महिलाओं का सामाजिक-आर्थिक भूमिका में परिवर्तन हो रहा है लेकिन उन्हें समानता हासिल नहीं हो रही क्योंकि हमारे परम्परागत मूल्य-व्यवस्था लिंग, जाति-धर्म इत्यादि में बंधी हुई है. वैसे ही वंचित वर्गों के लिए मूल्यों की भूमिका अन्यायपूर्ण हो जाति है. ऐसे में हमारे लिए सामाजिक मूल्य ज्यादा महत्वपूर्ण हो जाते हैं क्योंकि कार्यसम्बन्धी मूल्यों पर भी हम प्राय जाति-धर्म,लिंग की परम्परावादी सोच का साया देखते हैं.

भारतीय प्राचीन धर्म-ग्रन्थों में चरित्र निर्माण पर विशेष जोर दिया गया है. जिस मनुष्य को मानसिक शांति प्राप्त है, जो कर्म, वचन में संतुलन बनाये रख सकता है, वह संसार की भलाई कर कर सकता है और संसार का नाश होने से बचा सकता है. सभी देशों के प्राचीन संतों के साथ-साथ आज के उदार चिंतक भी है, जो आत्मीयता एवम कृतज्ञता को प्रधानता देते आयें है. मनु के धर्म के दस लक्षण -संतोष, क्षमा, आत्मसंयम, दूसरों की सम्पत्ति के प्रति लोभ-संवरण, शारीरिक पवित्रता, जितेन्द्र , विद्या एवम ज्ञान की प्रेरणा, सत्यवादिता एवम क्रोधशमन, ये शिष्टाचार के दस नियम भी इसी श्रेणी में आते हैं. डॉ दिवाकर पाठक के अनुसार, जिस प्रकार पाश्चात्य नीतिशास्त्र के विकास की विभिन्न अवस्थाएं हैं : ग्रीक या प्राचीन नीतिशास्त्र, मध्यकालीन नीतिशास्त्र, आधुनिक नीतिशास्त्र और समकालीन अधिनितिशास्त्र. ठीक उसी प्रकार भारतीय नीतिशास्त्र के भी क्रमिक विकास की चार प्रमुख अवस्थाएं हैं :

1. प्राचीन भारतीय नैतिक चिन्तन
2. मध्यकालीन संतों के नैतिक उपदेश
3. उन्नीसवीं शताब्दी के धर्मसुधारकों के नैतिक विचार
4. आधुनिक नैतिक चिन्तन धारा[5]

इस तरह हम देखते हैं कि भारत में नैतिक दर्शन की एक विस्तृत परम्परा है और हमें मनुष्य के चरित्र, व्यवहार, कर्तव्यों और उत्तरदायित्व इत्यादि मूल्यों सम्बन्धी चर्चा मिलती है.भारत में नैतिक सिद्धांतों के जीवन के साथ अवियोज्य सम्बन्ध रहा है. यहाँ नीतिशास्त्र व्यक्ति के आचरण का विज्ञान रहा है. यहाँ दर्शन का निति से गठबधन रहा है तहत इसका सदा प्रयोजनवादी (प्रग्मटिक) दृष्टिकोण रहा है. भारतीय नैतिक चिंतकों के समक्ष दो प्रमुख प्रश्न रहे हैं :

i. मानव-जीवन का सर्वोतम लक्ष्य क्या है ?

ii. किसी भी परिस्थिति में मनुष्य को कैसा कर्तव्य करना चाहिए?

यही कारण है कि प्रत्येक परम्परावादी भारतीय दार्शनिक मत की अपनी एक आचार -संहिता है.[6]

व्यक्ति के जीवन के प्रश्नों और समस्यायों के बदलते रहने के कर्ण जीवन के लक्ष्यों में भी परिवर्तन होता है . फिर भी विभिन्न परम्परागत दर्शनों में मानव जीवन के आदर्शों का वर्णन मिलता है. प्लेटो अपने श्रेष्ट राज्य की अवधारणा में मानव-भव्यता (ह्यूमन एक्सीलेंस) का आदर्श प्रतिस्थापित करता है. उनका विश्वास था कि जीवन में प्रत्येक वास्तु अपना पृथक और विशेष कर्तव्य रखती है और इस कर्तव्य का पालन भव्यता के साथ ही किया जा सकता है. उसका यह भी विश्वास था कि प्रत्येक मनुष्य का अपना विशेष चरित्र होता है जो न तो द्विमुखी होता है और न बहुमुखी. अपने विशेष चरित्र का अनुगमन करने के बाद ही मानव भव्यता प्राप्त कर सकता है . मानव-भव्यता सदाचार के सामान होती है. स्वयं को जानना, स्वयं के प्रतिभा संश्लेष्ण को समझना, स्वयं के चरित्र को पहचानना, उसका अनुगमन करना तथा अपने अनुकूल कार्य करना आदि मानव-भव्यता तो है ही, सदाचार भी तो है. अरस्तु राज्य को एक नैतिक संस्था मानता है, और इसका आस्तित्व मनुष्य को जीवित रखने के लिए नहीं , वरन उसे श्रेष्ट जीवन व्यतीत कराने के लिए है. अतः दोनों के ही अनुसार उचित राज्य को अपने सदस्यों के कल्याण के लिए प्रयत्नशील होना चाहिए.[7] इस तरह हम देखते हैं कि एक अच्छा देश या समाज वही है जो अपने नागरिकों में मूल्य निर्माण में मददगार होता है. सामाजिक मूल्यों और सामाजिक व्यवस्था में बहुत ही सापेक्ष सम्बन्ध है.

नैतिक नेतृत्व: सामान्य वर्णन:

व्यक्ति का नैतिक जीवन समाज के नियमों और नीतियों के अनुसार नियंत्रिक होता है. ऐसे नैतिक जीवन को में मनुष्य जहाँ सही और गलत की पहचान से अपने जीवन को अधिक सही और अर्थपूर्ण बनाता है, वहां उसका यह कर्तव्य भी बनता है कि वह अपने आस-पास हो रहे अनैतिक व्यवहार पर भी

दृष्टि रखे और उसको संवारने के लिए अधिकाधिक प्रयास करे. मनुष्य का अधिकतर जीवन बाहरी परिस्थितियों पर निर्भर करता है.[8] ऐसे में हमें नैतिक नेतृत्व के मापदन्डों का निर्धारण करना अनिवार्य हो जाता है जिस पर बाहरी परिस्थितियों का प्रभाव कम पड़े और नैतिक जीवन का निर्वाह भी हो. सामान्यतः न्यायनिष्ठ, सत्यनिष्ठा, निष्पक्षता, कुशलता, सहयोग, दूरदर्शिता, तटस्थता इत्यादि कुछ गुण कुशल नेतृत्व से उम्मीद की जाती है. लेकिन जब हम नैतिक नेतृत्व की बात आती है तो मूल्य सबसे ज्यादा महत्व रखते हैं. वे मूल्य कैसे हों ? उनका निर्धारण किस तरह से हो ? उन मूल्यों को कैसे नेतृत्व में ढाला जाये ? ये कुछ ऐसे प्रश्न हैं जो हमारे सामने एक चुनौती बनकर खड़े हो जाते हैं.

हमारे समाज का भविष्य क्या है ? हम किन मूल्यों को अपने जीवन में जगह दे रहें हैं? धर्म, जाति , लिंग, संस्कृति ये सब आज पुरे विश्व के सामने एक चुनौती बनकर खड़े हों गये हैं. एक अच्छे नागरिक की परीभाषा को हम कैसे चिन्हित करें? ये न केवल हम राष्ट्रिय पदों के रूप में ही देख सकते हैं बल्कि तकनीकी विकास और वैश्वीकरण के सन्दर्भ में भी हमें समझना पड़ेगा. नैतिक नेतृत्व निम्नलिखित 3 पदों का संगठन है :

1. चरित्र **(Character)**
2. शिष्टाचार **(Civility)**
3. सामुदायिकता **(Community)**

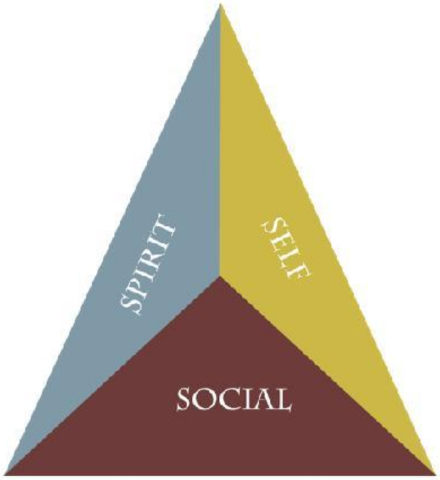

Figure 1: The Ethical Leadership Model—Self, Social, and Spiritual

जब हम "नैतिक" शब्द का प्रयोग करते हैं तो नीतिशास्त्र के वर्तमान में चल रहे बहुत से प्रत्यय हमारे सामने आते हैं जैसे इच्छा मृत्यु, लिंगानुपात आदि जो आजकल सामान्यतः नीतिशास्त्र का हिस्सा बन चुके हैं. नैतिक नियम ठाट प्रथाएं जोकि एक बड़े स्तर पर लोगों द्वारा स्वीकृत हैं कई बार नैतिकता का हिस्स्सा मानी जाती हैं पर इनपर प्रश्नचिन्ह तब लग जाता है जब इनको विस्तार देने की कोशिश की जाती है. ऐसे में हमें एक अच्छे नेता और एक बुरे नेता के गुणों को बताने के लिए ज्यादा तार्किकता की जरूरत होती है. नैतिक-नेतृत्व के प्रत्यय में आध्यात्मिकता, नीतिशास्त्र और नेतृत्व सबका वर्णन करना पड़ता है जब हम चरित्र, शिष्टाचार और सामुदायिकता से जुड़े हुए पहलुओं का विस्तृत वर्णन करने लग जाते हैं. इसमें हमे व्यक्ति से सम्बंधित प्रत्यय जैसे स्व, समाज और अध्यात्म जैसे गूढ़ विषयों पर भी विस्तृत बात करनी पड़ जाती है.

जब हम नैतिक नेतृत्व की बात करते हैं तो बाह्य वातावरण के साथ साथ हमें आंतरिक वातावरण को भी समझना पड़ता है जो चरित्र, शिष्टाचार और सामुदायिकता की भावना पैदा करने में मदद करते हैं. हमें एक ऐसे व्यक्ति का निर्माण करना होता है जो शारीरिक के साथ मानसिक, भावात्मक , बौद्धिक , नैतिक-आध्यात्मिक तौर पर सक्षम हों. जब हम अपने आस पास के सिद्धांतों पर नजर डालते हैं तो हमे बौद्धिकतावादी, उपयोगितावादी, व्यवहारवादी और सापेक्षतावादी आदर्श नैतिकता के सिद्धांत मिलते हैं. नैतिक नेतृत्व के लिए हमें "सदगुण-सम्पन्न" आदर्श सिद्धांत की जरूरत है जोकि परम्परागत सद्गुणों के साथ साथ मूल्यों और कौशल से युक्त हो और ऐसा तभी सम्भव है जब वह किसी विशेष संस्कृति-समुदाय के व्यवहार को आदर्श न मान जो वर्तमान के साथ भी सामजस्य स्थापित कर सके. इसके लिए हमें निम्लिखित मॉडल को ध्यान में रखना होगा:

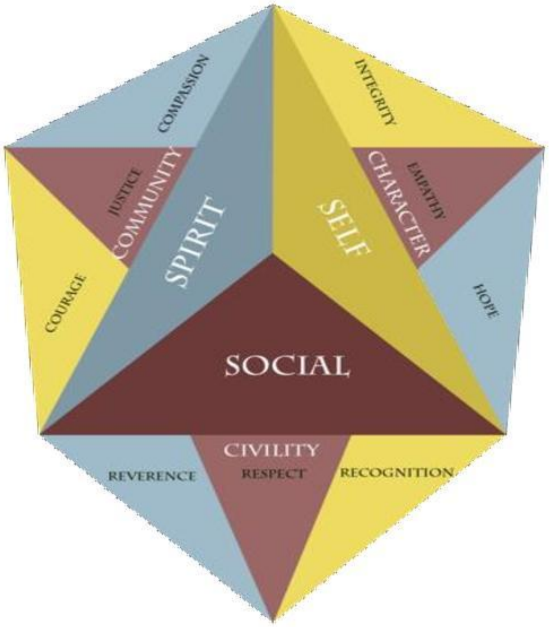
COMPASSION
INTEGRITY
JUSTICE
COMMUNITY
SPIRIT
SELF
CHARACTER
EMPATHY
COURAGE
HOPE
SOCIAL
CIVILITY
REVERENCE
RESPECT
RECOGNITION

Figure 2: The Ethical Leadership Model—Defining Virtues, Values & Virtuosities of Character,Civility and Community

प्रोफेसर फ्लुकर (**Flucker**) के अनुसार, “चरित्र (**character**), शिष्टाचार (**civility**), सामुदायिकता (**Community**) इन तीन मुख्य अवधारानाओं के प्रयोग के द्वारा हम आलोचनात्मक सद्गुणों (**Critical virtues**), मूल्यों (**values**) और दक्षताओं (**virtuousities**) जोकि नैतिक-नेतृत्व के सम्पूर्ण सिद्धांत और अभ्यास है. चरित्र के अंतर्गत हम तीन सदगुणों : सम्पूर्णता (**integrity**), समानुभूति (**empathy**), आशा (**hope**), शिष्टाचार के अंतर्गत तीन मूल्यों या सामाजिक अभ्यासों: मान्यता (**recognition**), प्रतिष्ठा (**respect**), आज्ञापालन (**reverence**) और सामुदायिकता के अंतर्गत तीन दक्षताओं साहस (**courage**), न्याय (**justice**), संवेदना (**compassion**) आदि का अध्ययन करते हैं. इसके अलावा नैतिक नेतृत्व के लिए जागरूकता भी जरूरी है जिसके द्वारा उभरते नेता समाज के आंतरिक और बाहरी चुनोतियों को समझ सकते हैं और उसके लिए सम्भावित दूरदर्शिता बना सकते हैं. इसमें सबसे ज्यादा जोर सामुदायिक जीवन में आध्यात्मिकता और कल्पना के प्रयोग पर रहता है जिसमें अपरोक्त तीनों अवधारणाएं चरित्र (**character),** शिष्टाचार (**civility),** सामुदायिकता (**Community**) निहित रहती हैं. इसमें सबसे बड़ा योगदान उभरते नेताओं द्वारा विस्तृत सामाजिक-ऐतिहासिक संघटना से जुडी कहानियों को याद रखना, दोबारा सुनाना और पुनर्विचार करके अपनी

व्याख्या देना है जिससे की तीनों अवधारणाएं चरित्र (character), शिष्टाचार (civility), सामुदायिकता (Community) का निर्माण होता है.[9]

हमारा समाज और भारतीय संविधान :

जीवन मूल्य और नैतिकता व्यक्ति में जन्मजात रूप से नहीं पाई जाती है. समाज के बीच रहकर व्यक्ति उनकी पहचान करता है और उन्हें अपने आप में विकसित करता है. उसका व्यक्तित्व पूर्णतः उसकी अपनी मौलिक निर्मिति नहीं होता अपितु उस पर पूर्ण परम्परा का भी प्रभाव रहता है. वह महान विचारकों, सुधारकों आदि के जीवन से प्रेरणा प्राप्त करता है, इनका अध्ययन न केवल उसका वर्तमान की समस्याओं से निकलने का मार्ग प्रशस्त करता है, बल्कि यह भी बताता है कि वह अपनेजीवन को किस प्रकार रूपान्तरित करे ताकि वह भी उन्हीं के जैसा महान व्यक्तित्व बन सके.[10] वर्तमान समय में देश सामाजिक, राजनैतिक, गैर-राजनितिक व्यवस्थाएं निम्न और निकृष्टतम स्तर पर हैं. ऐसे में आवश्यकता है समाज को सचेतन बनाकर रखने की. अतः आज के समय में कुशल नेतृत्व का प्रमुख लक्षण है वर्तमान परिस्थिति की प्रतिकूलता को अनुकूलता में परिवर्तित करते हुए नई पीढ़ी के निमित्त समुन्नति, सुशिक्षा, सुव्यवस्था, सुरक्षा एवम् बौद्धिक-सांस्कृतिक उन्न्यन की. इसके लिए उचित व्यवहार पद्वति को अपनाने की है.

समाज में प्रत्येक व्यक्ति को आचारवान होने की नितांत आवश्यकता है. इसके लिए प्राचीन भारतीय जीवन दर्शन में बहुत ही विस्तृत वर्णन किया गया है.जब व्यक्ति में नैतिक दायित्व की भावना होगी तभी मनुष्य सत्कर्म और परोपकार की ओर अग्रसर होता है. भर्तहरी के नीतिशतक में कहा गया है कि चरित्र ही व्यक्ति, समाज और सत्ता तथा देश का सबसे आकर्षक भूषण होता है पद्मपुराण में कहा गया है की हम दूसरों के साथ वैसा ही व्यवहार करें जिस व्यवहार की अपेक्षा हम लोगों से अपने लिए करते हैं- प्रतिकूल व्यवहार कभी भी वांछनीय और प्रतिकूल नहीं हो सकता.[11] लेकिन हम भारतीय समाज के चरित्र में पाते हैं की यह सभी मूल्य किताबों तक ही सिमित रह गये. धर्म, जाति, लिंग के खेल ने कभी दूसरों के साथ गरिमापूर्ण व्यवहार नहीं करने दिया गया. ऐसे में हमे नैतिकता के उन मापदन्डों को अपनाना पड़ेगा जिससे उन मूल्यों का सृजन हो सके जो आज के नेतृत्व को सही दिशा सके. अतः नैतिक-नेतृत्व के लिए परम आवश्यकता उन संवैधानिक मूल्यों की है जिन्होंने संकीर्ण विचारधारा से उपर उठकर देश और व्यक्ति विकास में योगदान दिया है. इस तरह भारतीय संदर्भ में समझें तो नैतिक-नेतृत्व के लिए

न्याय, स्वतंत्रता, समानता और बंधुता ये वास्तविक मूल्य नजर आते हैं. आज की हमारी आवश्यकता भारत के समस्त नागरिकों को ऐसा जीवन देने की है जिसमें निम्न आदर्श निहित हों:

- समाजिक, आर्थिक और राजनैतिक न्याय
- विचार, अभिव्यक्ति, विश्वास धर्म, उपासना की स्वतन्त्रता
- प्रतिष्टा और अवसर की समानता
- व्यक्ति की गरिमा और राष्ट्र की एकता सुनिश्चित करने वाली बंधुता

जब तक उपरोक्त आदर्शों स्वयं अपनाकर कार्य करने वाले लोग हमारे जीवन के हर क्षेत्र में नहीं होंगे तो समाजिक समस्यायों से हम जूझते रहेंगें. भ्रष्टाचार, गरीबी, बलात्कार, मानवाधिकारों का हनन, कालाबाजारी, अशिक्षा, बेरोजगारी, अस्वच्छता, गंदी राजनीति, धर्म की आड़ में कुकर्म और सामाजिक जवाबदेही इत्यादि का मूल कारण अच्छे नेतृत्व की कमी के कारण ही है. जब तक हर क्षेत्र में काम करने वाले लोगों का जीवन मूल्यपरक और सामाजिक जिम्मेवारी से विमुख होगा ये समस्याएं हमारे सामने मुहं बाये खड़ी रहेंगीं. अतः जैसा आदर्श लेकर समाज के लोग जीवन जीते हैं उसी तरह का समाज बनता है, हर व्यक्ति को संकल्पपूर्वक अपने जीवन और समाज के प्रति उतरदायी होकर काम करने की आवश्यकता है और न्याय, स्वत्रन्त्रता, समानता और बंधुता को जीवन आदर्श बनाने की आवश्यकता है.

References:

1. उद्धरण- डॉ हिम्मत सिंह सिन्हा, संस्कृति-दर्शन, हरियाणा साहित्य अकादमी, चंडीगढ़, 1990, पृष्ट 22.
2. वही, पृष्ट 22.
3. वही, पृष्ठ 24.
4. नीतिशास्त्र, सत्यनिष्ठा और अभिरुचि, आई ए एस मुख्य परीक्षा, सामान्य अध्ययन पेपर 4, अरिहंत पब्लिकेशन्स(इंडिया) लिमिटेड, 2014, पृष्ट 25-29.
5. डॉ दिवाकर पाठक, भारतीय नीतिशास्त्र की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, बिहार हिंदी ग्रन्थ अकादमी, पटना, 1994, पृष्ट 6.
6. वही, पृष्ट 14.
7. सी. एल. वेपर, राजदर्शन का स्वाध्यायन, किताब महल, इलाहबाद, पृष्ट 21, 28.

8. शालिंदर सिंह एवम अन्य, फंडामेंटल्स और एप्लाइड एथिक्स, कृष्णा ब्रदर्स,जालंधर,2011, पृष्ट 01.
9. प्रोफेसर फ्लुकर, एथिकल लीडरशिप: करैक्टर, सिविलिटी एंड कम्युनिटी, इडीएक्स कोर्स.
10. नीतिशास्त्र, सत्यनिष्ठा और अभिरुचि, आई ए एस मुख्य परीक्षा, सामान्य अध्ययन पेपर 4, अरिहंत पब्लिकेशन्स(इंडिया) लिमिटेड, 2014, पृष्ट 37.
11. सीताराम झा ‘श्याम’ सामाजिक उत्क्रांति और राष्ट्रिय उत्कर्ष (समाजशास्त्रिय विवेचन), बिहार हिंदी ग्रन्थ अकादमी, पटना, 2015, पृष्ट 12.